

भारत सरकार
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 218
25.11.2024 को उत्तर के लिए

ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन

218. श्री अशोक कुमार रावत :

क्या पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या खाद्यान्न उत्पादन से देश भर में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि हुई है;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या देश में खाद्यान्नों का प्रति हेक्टेयर उत्सर्जन बढ़ गया है; और
- (घ) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं और इसे कम करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

**पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)**

(क) से (घ): वर्ष 2023 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) को भारत द्वारा प्रस्तुत तीसरी राष्ट्रीय संप्रेषण (टीएनसी) रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2019 में कृषि क्षेत्र से होने वाले उत्सर्जन 420.97 मिलियन टन CO₂ समतुल्य था। कृषि उत्पादन में वृद्धि के बावजूद, पिछले दो दशकों में कुल ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन में कृषि क्षेत्र से होने वाला उत्सर्जन का हिस्सा लगातार कम हुआ है, जोकि वर्ष 2000 में 23% से कम होकर 2010 में 18% और 2019 में 13.44% हो गया है। उत्पादित खाद्यान्न के प्रति टन उत्सर्जन में सामान्य रूप से कमी आई है, लेकिन हाल के वर्षों में उर्वरकों के बढ़ते उपयोग के कारण खाद्यान्न उत्पादन के प्रति हेक्टेयर उत्सर्जन में वृद्धि हुई है।

सरकार कई संधारणीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दे रही है जिसमें जैविक खाद, जैव-उर्वरक का उपयोग, फसल विविधीकरण, फसल चक्र में फलियों को जोड़ना और विभिन्न फसलों के लिए सूक्ष्म सिंचाई शामिल हैं। देश भर में फसल की खेती के लिए नीम-लेपित यूरिया के उपयोग से नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन में लगभग 5% की कमी आई है। अपनाई गई अन्य उपशमन पद्धतियाँ चावल की खेती के वैकल्पिक तरीके हैं, यथा सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों के माध्यम से एरोबिक चावल, सीधे बीज-

बुआई वाले चावल, चावल की मात्रा बढ़ाने वाली प्रणाली, धान से वैकल्पिक फसलों जैसे फलियों की फसल विविधीकरण, कृषि अवशिष्ट को जलाने में कमी और वर्मीकंपोस्टिंग, बायोगैस उत्पादन आदि के माध्यम से फसल अवशेषों का पुनर्चक्रण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और पत्ती रंग चार्ट के आधार पर उर्वरकों का उपयोग, जोखिम न्यूनीकरण के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली और पारंपरिक रूप से गेहूं उगाने वाले क्षेत्रों में टर्मिनल हीट स्ट्रेस से बचने के लिए जीरो टिल ड्रिल गेहूं।
